जॉन डीवी का जीवन–परिचय

अजय कुमार मिश्र सुत
अध्यक्ष, ि ाक्षा ाास्त्र विभाग, गनपत सहाय पी0जी0 कालेज, सुल्तानपुर।

सामान्यतः विद्वान् महामनीशियों, दा ार्निकों का जन्म ही वि ाि ाष्ट प्रयोजन के निमित्त होता है। ि ाक्षा जगत में अमेरिकन ि ाक्षा–दा ार्निक जॉन डीवी का अवतरण भी वस्तुतः इसी रूप में हुआ जब आद ार्वाद और भौतिकवाद दो परस्पर विरोधी मान्यतायें वि व–वसुधा के समस्त ि ाक्षा–क्षेत्र को भ्रमित किये हुए थी, तभी वर्श 1959 में इस महान् ि ाक्षा महारथी का जन्म हुआ। जॉन डी0वी0 के जीवन–द ार्न को अनेक विद्वानों के विचारों ने प्रभावित किया और इनके जीवन–द ार्न को प्रयोगात्मक आद ार्वाद के नाम से जाना जाता है जो डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त से प्रभावित लक्षणों से युक्त हो गया, आद ार्वाद और प्रकृतिवाद में समन्वयता द ार्ाते हुए जॉन डीवी ने प्रयोजनवादी द ार्न के रूप में एक नये द ार्न की नींव डाली। जॉन डीवी ने अन्तर्मन, ज्ञान, बौद्धिक, चिन्तन आदि पर अपने वि ाि ाष्ट विचार विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है।

अन्तर्मनीय–द ार्न : जॉन डीवी ने 'मन' को विकास का परिणाम माना है। डीवी के जीवन–द ार्न में मन–मश्तिश्क का महत्वपूर्ण घटक है। उसका मत है कि मन, जीवन की नाना प्रकार की समस्याओं का समाधान करने के लिए जो किया करता है, वह विकास का परिणाम है। डीवी का मानना था कि मन ई वर का अं ा नहीं है, बल्कि यह विकास की क्रिया का परिणाम है, जो आव यकताओं के अनुसार स्वयं विकसित होता रहता है। पैदा होने के समय प्राणी का मस्तिश्क पूरी तरह भून्य होता है। ज्यो–ज्यों जीवन की सामान्य दैनिक क्रिया–कलापों को पूर्ण करना होता है, त्यों–त्यों मन का विकास होता जाता है।

डीवी के अनुसार मन एक प्रभावकारी साधन है जो अपने विचार, भाव और क्रिया–पक्षों से जीवन की सामाजिक और व्यवहारिक समस्याओं को हल करता है। ि ाक्षा, मन को कार्य करने का अवसर प्रदान करती है, जिसके कारण मन का कार्यक्षेत्र बढ़ता है। इसी साधन के कारण सम्पूर्ण सृश्टि में अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव प्राणी को श्रेश्ठतम् स्थान प्राप्त है।

मनुश्य का भारीर एक वाहन के रूप में, और उसमें विद्यमान मन पूरी तरह नियन्त्रक सवार का कार्य करता है।

ज्ञान सम्बन्धी–द ार्न : जॉन डीवी के जीवन–द ार्न में ज्ञान सम्बन्धी विचारों का उल्लेख करते हुए डॉ0 प्रसाद एवं गुप्ता ने लिखा है कि ''वास्तविक ज्ञान वही है जो हमारे संस्कारों में संगठित है, जिससे हम अपने आस–पास की जरूरतों को अपने अनुकूल बनाते हैं, और अपने उद्दे यों तथा इच्छाओं को उस परिस्थिति के अनुकूल बनाते हैं, जिसमें हम निवासित है, परन्तु ज्ञान–गुण प्राप्त करने के लिए जिस वस्तु की प्रथम एवं प्रमुख आव यकता है वह है क्रिया। क्रिया, ज्ञान की आध ाार–ि ाला है, क्रिया के अभाव में ज्ञान की प्राप्ति सर्वथा अधूरी और दोशपूर्ण ही रहती है।''

डीवी ने 'ज्ञान' को 'क्रिया का परिणाम' माना है। वह इस बात के वि वास नहीं करता कि 'ज्ञान' क्रिया का पथ–प्रद ार्क है। उसके अनुसार क्रिया का कार्य–व्यापार ही ज्ञान का स्त्रोत है। उसका कहना है कि 'ज्ञान' क्रिया के वाद होता है और क्रिया के अनुभव के बाद होती है। इस प्रकार अनुभव–क्रिया–ज्ञान का एक क्रम होता है। डीवी का मानना है कि अनुभव द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है, और अनुभव क्रिया द्वारा उत्पन्न होता है। इसीलिए डीवी ि ाक्षण–विधि के रूप मं प्रयोगात्मक प्रणाली को आव यक मानते है। इसमें कार्य करता हुआ बालक अनेक तथ्यों की सही जानकारी प्राप्त कर लेता है। डीवी के अनुसार प्रत्यक्षद ार्ी व्यक्ति ही वास्तविक और यथार्थ ज्ञान प्राप्त करता है, और वही अपने ज्ञान का दैनिक जीवन में भी उपयोग कर सकता है। इस प्रकार डीवी क्रिया को ज्ञान–प्राप्ति और सत्य की खोज का आधार मानते है।

मूल्य सम्बन्धी–द ार्न : मूल्य, सामान्यतः दि ाा–निर्दे ाक–तत्व के रूप में एक नियम होता है। जीवन को सुधारने, संवारने और सुखमय बनाने को ही मूल्य कहते है।

डीवी के मतानुसार सत्य, मूल्य आद ार्आदि स्थिर, भाा वत और नि ाचत नहीं होते वरन् उनका निर्माण किया जाता है और वे परिवर्तन ाील है। एक व्यक्ति के जीवन में जब प्रत्येक परिस्थिति के अनुरूप उसकी स्थिति और भूमिकाओं में परिवर्तन हो जाता है, तब उसके परिवर्तित जीवन में मूल्यों का पूर्ण निर्धारण किसी भी प्रकार से नहीं किया जा सकता है।

जॉन डीवी का उल्लेख करते हुए ि ाक्षा–दा ार्निकों ने लिखा है कि ''जो परिकल्पना व्यावहारिक रूप में कार्य करती है, वह सत्य है। सत्य भाववाचक संज्ञा है, जिसका प्रयोग उन वास्तविक पूर्व अनुमति और वांछित तथ्यों के संकलन के लिए किया जाता है जिनकी अपने परिणामों द्वारा पुश्टि होती है।''

चिंतन सम्बन्धी–द ार्न: ''चेतना–विकास के मनोवैज्ञानिकों का निश्कर्श है कि चेतना पत्थर में सोती है, वनस्पतियों में स्थिर

अनुरूपी लेखक

रहती है, प ा में चलती और मनुश्य में चिंतन करती है। अतः, मनुश्यता का प्रथम लक्षण चिन्तन करना होना चाहिए।''

डीवी के अनुसार चिन्तन सामाजिक एवं प्राकृतिक वातावरण से अनुकूलन हेतु व्यक्ति द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक साधन है। उसने चिंतन को क्रिया ीलता का एक कार्य कहा है जो किसी समस्या, बाधा और कठिनाई आदि की प्रेरणा से होती है।

सुखमय जीवन के लिए मनुश्य को अपनी दैनिक आव यकताओं की पूर्ति हेतु वर्तमान समसामयिक परिस्थितियों पर चिंतन करते हुए उसके अनुकूल रूपरेखा बनाकर क्रियान्वयन करना चाहिए। डीवी का उल्लेख करते हुए डॉ0 पाल ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि 'सभी चिंतन एक प्रकार का प्रयोग है। सामान्यतया यह माना जाता है कि चंतन एकान्त का विशय है, परन्तु इस प्रकार भाुद्ध चिंतन और मनन एकान्त में होना सम्भव नहीं है। क्योंकि चिंतन के लिए किसी समस्या, कठिनाई या बाधा का होना आव यक है। एकान्त में उसके सामने न कोई वि ोश समस्या उत्पन्न होगी, और न वह चिंतन के लिए प्रेरित होगा।'

जॉन डीवी के अनुसार चिंतन (सोचने की प्रक्रिया) के पाँच चरण होते है–

अ– किसी समस्या या बाधा को अनुभव करना,

ब– समस्या के कारण जानने के लिए सम्पूर्ण स्थिति का वि लेशण करना,

स– समस्या के समाधान हेतु व्यवहारिक साधनों की खोज करना,

द– सभी व्यवहारिक साधनों में से सरल एवं उत्कृश्ट समाधान का योग करना, तथा

य– समाधानकारण निरीक्षण एवं प्रयोग करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डॉ0 डी0एन0 प्रसाद एवं गुप्ता, हमारी माध्यमिक िक्षा इसके सिद्धान्त एवं समस्याएँ, कला–निकेतन पटना, 1957 पृश्ठ–52–53

रमन बिहारी लाल– िक्षा–द र्न, 2003 पृश्ठ–160

पाठक एवं त्यागी– िक्षा के सामान्य सिद्धान्त–1994 पृश्ठ–245

प्रतियोगिता दर्पण (सम्पादकीय) 1998, पृश्ठ–9।

डॉ0 एस0के0 पाल, िक्षा द र्न 1996 पृश्ठ116

*****